Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)

Vol.-1; Issue-1 (July-Sept.) 2025

Page No.- 01-04

©2025 **Sanvahak**

https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

सहायक आचार्य, (कम्प्यूटर विज्ञान), जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर.

Corresponding Author :

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

सहायक आचार्य, (कम्प्यूटर विज्ञान), जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर.

व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण में सूचना प्रौद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका : एक समग्र विश्लेषण

सारांश : यह शोध पत्र डिजिटल युग में सूचना प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करता है। इसमें सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म्स और एआई-आधारित उपकरणों के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति, कौशल विकास और व्यक्तिगत प्रगति के सकारात्मक पहलुओं को रेखांकित किया गया है। साथ ही, डिजिटल व्यसन, गोपनीयता हनन और सामाजिक तुलना जैसे नकारात्मक प्रभावों पर भी प्रकाश डाला गया है। यह अध्ययन सुझाव देता है कि डिजिटल साक्षरता, नैतिक एआई विकास और डेटा सुरक्षा को प्राथमिकता देकर हम तकनीक का उपयोग व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण के लिए प्रभावी रूप से कर सकते हैं।

मुख्य शब्द: व्यक्तित्व विकास, चरित्र निर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमता।

1. परिचय : आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को गहराई से प्रभावित किया है। डिजिटल क्रांति के इस दौर में स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स ने न केवल हमारे संचार के तरीकों को बदला है, बल्कि हमारे सोचने, समझने और खुद को अभिव्यक्त करने के ढंग को भी पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। यह परिवर्तन विशेष रूप से व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण की प्रक्रियाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

पारंपरिक रूप से व्यक्तित्व और चरित्र का विकास परिवार, शिक्षण संस्थानों और सामाजिक परिवेश के माध्यम से होता था। किंतु आज डिजिटल माध्यमों ने इस प्रक्रिया में एक नया और शक्तिशाली आयाम जोड़ दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर व्यक्ति की आत्म-प्रस्तुति, ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों के माध्यम से कौशल विकास, और एआई-आधारित उपकरणों के साथ निरंतर संवाद ने व्यक्तिगत विकास

के नए द्वार तो खोले हैं, लेकिन साथ ही इनके कारण मानसिक स्वास्थ्य, वास्तविक सामाजिक संबंधों और नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले संभावित नकारात्मक प्रभावों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

इस शोध पत्र का उद्देश्य व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण में सूचना प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करना है। हम इन प्रौद्योगिकियों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं की जांच करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि कैसे हम इनका उपयोग व्यक्तित्व और चरित्र के सर्वांगीण विकास के लिए कर सकते हैं।

2. सैद्धांतिक पृष्ठभूमि : व्यक्तित्व और नैतिक विकास के अध्ययन हेतु सिगमंड फ्रायड (Freud, 1923) का मनोविश्लेषण सिद्धांत, अल्बर्ट बांडुरा (Bandura, 1977) का सामाजिक अधिगम सिद्धांत का नैतिक विकास सिद्धांत आज भी आधारशिला माने जाते हैं। इन सिद्धांतों के अनुसार, व्यक्ति का व्यवहार उसके पर्यावरण से अर्जित अनुभवों, आत्म-संवेदनाओं और समाज की प्रतिक्रिया से आकार ग्रहण करता है। आज यह पर्यावरण बड़े स्तर पर डिजिटल हो चुका है, जिससे अधिगम के नए आयाम जुड़े हैं।

लॉरेंस कोहलबर्ग (Kohlberg, 1958) के नैतिक विकास सिद्धांत ने चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया है। उनके अनुसार, व्यक्ति का नैतिक विकास विभिन्न चरणों से गुजरता है। डिजिटल युग में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि प्रौद्योगिकी ने व्यक्ति के सामाजिक संपर्क और सूचना तक पहुंच के तरीकों को मौलिक रूप से बदल दिया है।

3. सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक प्रभाव : प्रसिद्ध अनुसंधान संस्थान Pew Research Center (2022) की रिपोर्ट के अनुसार, 18 से 29 वर्ष की आयु के 84% युवा प्रतिदिन सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। यह मंच आत्म-अभिव्यक्ति, संवाद कौशल, और विचारों के आदान-प्रदान में सहायक बन रहा है। UNESCO (2020) की रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक शिक्षा संकट के दौरान ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म जैसे SWAYAM, Coursera, edX और Khan Academy ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को सुनिश्चित किया। National Education Policy 2020 द्वारा भी डिजिटल शिक्षण को एक अभिनव उपकरण माना गया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित टूल्स जैसे ChatGPT, Grammarly, Duolingo आदि ने व्यक्तिगत मार्गदर्शन, भाषा विकास और अनुसंधान सहायता को सहज बना दिया है। एक शोध (Holstein et al., 2019) के अनुसार, AI सहायक प्रणालियाँ विद्यार्थियों की समस्या-समझने और आत्म-आकलन क्षमता को बेहतर बनाती हैं। ये उपकरण व्यक्तिगतकृत अनुभव प्रदान करते हैं, जिससे व्यक्ति अपनी रुचियों और आवश्यकताओं के अनुरूप विकास कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, भाषा सीखने वाले एप्लिकेशन्स जैसे डुओलिंगो ने व्यक्तिगत सीखने के अनुभवों को नया आयाम दिया है।

4. चुनौतियाँ और नकारात्मक प्रभाव : हालाँकि, सूचना प्रौद्योगिकी के कारण कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। डिजिटल व्यसन एक गंभीर समस्या बन गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 2019 में गेमिंग डिसऑर्डर को एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में मान्यता दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO, 2023) ने चेताया है कि अत्यधिक स्क्रीन टाइम से युवाओं में चिंता, अवसाद और नींद संबंधी विकार बढ़ रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर तुलना की प्रवृत्ति आत्म-सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है (Twenge et al., 2017)।

सोशल मीडिया पर व्यक्ति की आत्म-प्रस्तुति अक्सर वास्तविकता से अलग होती है, जिसके कारण आत्म-सम्मान में कमी और हीनभावना जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ पेन्सिलवेनिया के एक अध्ययन में पाया गया कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग अवसाद और चिंता को बढ़ावा देता है।

डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता भी एक गंभीर चिंता का विषय है। Cambridge Analytica प्रकरण (2018) ने यह सिद्ध कर दिया कि व्यक्तिगत डेटा का राजनीतिक और व्यावसायिक दुरुपयोग समाज की मूलभूत संरचना को क्षति

पहुँचा सकता है। इसी प्रकार, एआई प्रणाली में पूर्वाग्रह (bias) और पारदर्शिता की कमी को European Commission's Ethics Guidelines for Trustworthy AI (2019) ने प्रमुख चुनौती माना है।

5. नैतिक विचार और भविष्य की दिशा : इन चुनौतियों के समाधान हेतु तीन व्यापक दिशा-निर्देश सामने आते हैं :

1. **डिजिटल साक्षरता का समावेश**: UNESCO's Digital Literacy Global Framework (2018) के अनुसार, विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर डिजिटल साक्षरता को पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी तकनीक के विवेकपूर्ण उपयोग हेतु तैयार हो सकें।
2. **नैतिक AI विकास**: OECD Principles on Artificial Intelligence (2019) में नैतिक, निष्पक्ष और पारदर्शी AI की आवश्यकता पर बल दिया गया है। AI की डिजाइन प्रक्रिया में विविधता और जवाबदेही को सुनिश्चित करना आवश्यक है।
3. **भारतीय सन्दर्भ में नीति निर्माण**: भारत सरकार की National Digital Health Mission तथा Data Protection Bill (2023) जैसे प्रयास इस दिशा में प्रारंभिक कदम हैं, परंतु आवश्यक है कि शिक्षा, सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को भी इन नीतियों का अभिन्न अंग बनाया जाए।

भविष्य में हमें ऐसी प्रौद्योगिकियाँ विकसित करनी चाहिए जो मानव कल्याण को केंद्र में रखकर डिज़ाइन की गई हों। शिक्षकों, नीति निर्माताओं और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों के बीच सहयोग से हम एक संतुलित डिजिटल वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

6. निष्कर्ष : सूचना प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने व्यक्तित्व विकास और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित किया है। इन प्रौद्योगिकियों ने व्यक्तिगत विकास, शिक्षा और सामाजिक संपर्क के नए अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन साथ ही इनके दुष्प्रभावों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

भविष्य में, हमें तीन मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए: पहला, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना ताकि व्यक्ति प्रौद्योगिकी का विवेकपूर्ण उपयोग कर सकें। दूसरा, एआई विकास में नैतिक मानकों को सुनिश्चित करना। तीसरा, ऐसी नीतियाँ बनाना जो व्यक्तिगत गोपनीयता और डेटा सुरक्षा की रक्षा करें।

अंततः, यदि हम सूचना प्रौद्योगिकी का संतुलित और नैतिक उपयोग करें, तो यह व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण के लिए एक शक्तिशाली साधन सिद्ध हो सकती है। हमारा लक्ष्य ऐसी डिजिटल दुनिया का निर्माण करना होना चाहिए जो मानवीय मूल्यों का पोषण करे और व्यक्तिगत विकास के नए आयाम खोले।

सन्दर्भ :

1. Freud, S. (1923). The Ego and the Id. SE, 19:12–66.
2. Bandura, A. (1977). Social Learning Theory. Prentice Hall.
3. Kohlberg, L. (1958). The development of modes of thinking and choices in years 10 to 16. University of Chicago.
4. Twenge, J.M., et al. (2017). Increases in depressive symptoms, suicide-related outcomes, and suicide rates among U.S. adolescents after 2010. Clinical Psychological Science, 6(1), 3–17.
5. WHO. (2023). Mental health and technology in youth: A global perspective.
6. UNESCO. (2020). Education in a post-COVID world: Nine ideas for public action.
7. OECD. (2019). OECD Principles on Artificial Intelligence.
8. European Commission. (2019). Ethics Guidelines for Trustworthy AI.
9. Pew Research Center. (2022). Social Media Use in 2022.

10. Holstein, K., et al. (2019). Designing AI to support student learning. Proceedings of the CHI Conference on Human Factors in Computing Systems.
11. Government of India. (2020). National Education Policy. Ministry of Education.
12. Government of India. (2023). Digital Personal Data Protection Act. Ministry of Electronics and IT.
13. कुबेर सिंह गुरुपंच, & नागेश्वर प्रसाद साहू. (2014). सूचना प्रौद्योगिकी एवं वर्तमान परिवेश. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 5(2), 225-227.
14. अहमद एस.टी (2024). विकसित भारत निर्माण चुनौतियां एवं संभावनाएं". Booksclinic Publishing.
15. मिश्रा, जी.एन., एवं ठाकुर ए.के. (2024). समाजशास्त्रिय विचारधार. BFC Publications.
16. RANI, M. (2021). A STUDY OF DEPRESSION IN ADOLESCENTS. CONTEMPORARY ISSUES OF YOUTH, 144.
17. गुप्ता पी. (2014). मैं कलाम बोल रहा हूँ: Echoes of Abdul Kalam's Inspiring Words by Prashant Gupta. Prabhat Prakashan.
18. Miller, D., Costa, E., Haynes, N., McDonald, T., Nicolescu, R., Sinanan, J., ... & Wang, X. (2019). दुनिया ने कैसे सामाजिक मीडिया को बदल दिया: A Hindi Translation of How the World Changed Social Media. UCL Press.
19. Rāya, N. K. (2011). सूचना प्रौद्योगिकी और सामजिक सरंचना. Gyan Publishing House.
20. Singh, P. K. (2016). समर्थ भारत. Diamond Pocket Books Pvt Ltd.
21. Buzan, T., & Buzan, B. (2010). Mind Map Book, 1/e. Rajpal & Sons.
22. डॉ पुष्पा रानी. (2024). संस्कृत-कृत्रिम बुद्धिमता के लिए सर्वोत्तम-एक अनुशीलन. International Journal of Engineering Science and Humanities, 14(Special Issue 1), 178-182.
23. शील चंद. (2021). माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व विगनेट पर एक लघु अध्ययन. Universal Research Reports, 8(2), 102-108.
24. बायती, & जमना लाल. (1999). क्या शिक्षा के उद्देश्यों का पुनर्निर्धारण आवश्यक है. शिक्षा विमर्श, 19-27.
25. Singh, A. K. (2008). व्यक्तित्व का मनोविज्ञान. Motilal Banarsidass Publisher.
26. आरती कुमारी. (2018). ग्रामीण क्षेत्रों में संचार प्रोद्योगिकी की भूगिका. Innovative Research Thoughts, 4(4), 362-365.
27. असरा बीबी सिद्दीकी. (2024). जीवन कौशल शिक्षणः सफल जीवन का एक प्रमुख गुण. Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS) eISSN–2583-6986, 3(04), 1-2.

•